पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय साहित्य

सम्पादक
डॉ. अनुशब्द

पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय साहित्य

सम्पादक

डॉ. अनुशब्द

सम्पादन-सहयोग

नन्दिता दत्त

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
शाखा
अशोक राजपथ, पटना 800 004
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710
www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com
sales@vaniprakashan.in

POORVOTTAR BHARAT KA JANJATIYA SAHITYA
Edited by Dr. Anushabd

ISBN : 978-93-5229-657-6
Criticism

© 2017 सम्पादक

प्रथम संस्करण
मूल्य : ₹ 450

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

लिटी प्रेस, दिल्ली-110095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

अनुक्रम

पूर्वोत्तर एवं मध्य भारत के आदिवासियों की परम्परा एवं उनके प्रश्न
—रमणिका गुप्ता 11

पूर्वोत्तर भारत की राभा जनजाति की साहित्यिक सम्पदा
—डॉ. अच्युत शर्मा 18

उपेक्षित प्रश्न : जनजातीय भाषा सर्वेक्षण, संरक्षण
—प्रो. हेमराज मीणा 'दिवाकर' 30

मिसिंग जनजाति की लोक संवेदना
—डॉ. अनुशब्द एवं उन्मेषा कोंवर 34

न्यीशी जनजाति की वाचिक परम्परा
—डॉ. कुसुम कुंज मालाकार एवं चारु गोयल 44

भूमंडलीकरण तथा असम प्रान्त की भाषाओं एवं बोलियों के अस्तित्व का संघर्ष
—श्री कुल प्रसाद उपाध्याय एवं डॉ. जोनाली बरुवा 50

लोक-साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय जीवन
(बोडो, राभा और कार्बी जनजातियों के विशेष सन्दर्भ में)
—पूजा शर्मा 58

राजबंशी/गोवलपारिया लोकगीतों में कोच-राजबंशी जनजीवन
—मरमी राय बरुआ एवं बर्णाली बरदलै 73

असम के जनजातीय लोकनृत्य
—डॉ. परिस्मिता बरदलै 81

लोक-साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय जीवन
(मिसिंग जनजाति के लोकगीतों के सन्दर्भ में)
—मीरा दास 86

पूर्वात्तर के जनजातिय साहित्य में वैश्विक चेतना
—मनोहरमयुम यमुना देवी 96

कार्बी जनजीवन में लोकगीत : एक अध्ययन
—डॉ. अब्दुल मान्नान 99

असम के लोकजीवन और मौखिक साहित्य एवं वाचिक लोकविद्या में निविड सम्पर्क
—कंकणा सैकीया एवं गीतिका सैकीया 107

असमिया जनजीवन में लोककथाओं की भूमिका
—श्रीमती जोनटि दुवरा एवं सुमन गगै 120

तिवा जनजाति का समाज और संस्कृति
—जुपिटा पाटर 127

पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय भाषाओं का साहित्य
—मीनाक्षी देवी 133

असम के समकालीन सांस्कृतिक समाज जीवन में नृगोष्ठीय चाह जनगोष्ठी की भूमिका
—श्रीमती बर्णाली बैश्य 138

लोकगीतों में जनजातीय जीवन : मिसिंग जनजीवन के सन्दर्भ में
—मालविका शर्मा एवं कसीरा जहाँ 145

जनजातीय समाज में नारी की स्थिति, मर्यादा, वेशभूषा और प्रसाधन सामग्री
—करबी देवी 155

असमिया लोकगीतों में जनजातीय जीवन
—श्री रिनु बरा 160

लोक-साहित्य और आदिवासी जीवन
—अनुराधा क्षेत्री 169

भारतीय लोकनाट्य रूपों में लोक-तत्व और शास्त्र
(असम के 'अंकिया' नाट की रंगधर्मिता के सन्दर्भ में)
—मनोज कुमार सील एवं संदीप कुमार सिंह 176

ठेंगाल कछारी जनजाति का तोरा चिरा त्योहार और उनका संस्कार गीत : एक अध्यय
—डॉ. बाला लखेन्द्र 182